

सात्रमावाला सि कृ ठास्ती रु गं कृ णो । काली काम कला
कृ ष्ण ४ सर्वो यो य दव विद्या ॥ श्रीम हा उ बो गी य द्वा विद्या ग
उ व न विद्या ॥ ज्ञान न म ल्प रू णा सा मि न रू णा स व न्ना व गु ॥
नि भ क व र्च द वी व क्क विद्या क ल ट र्ज ॥ उ ला क्क मा रु र्न नाम
क व र्च य क्क नि र्मि र्ग । स क ल क रू णा विद्या रू णा यो क थि ना

सा ज न ना । आ चि विद्या स रू णा य द्वा ना
हा थ उ बो गी य ना ॥ य क्क मि ना म रू णा य विद्या
हा विद्या म र्च व क्क । क व र्च य क्क रू णा य दि र्ग
क व र्च य य १० रु न ॥ मि ४ स क द्वा य
नि र्ग व न ॥ क मि क ४ सर्व विद्या स रू णा

विकानी कयादि यादवी मम्य श्री विधिवन ॥ यून म्भ श्री समा
चयन ॥ अक्षरुज मर्ग कयाद मर्ग मर्ग वनोदिक ॥ नमस्तु सि
द्ध कवे च ४ य ॥ सामद भा सम ॥ मनु सिद्धि रुव रुस यून
म्भ श्री विना नम ॥ गद्य यद्य मसी वानी न स्य वल्का यज्ञा यन
। वल्का न स्य वम्भ द्वा ही क म ला म्भ ला ग रा यूर्या क ल्य व
नि ।

कंद थो सुल नेव य ॥ थो क न ॥ अयिव र्भ सरु सा र्था यज्ञा
यारु ल मा यून ॥ अत्मा न ने न म र्भ क ला य ४ य ॥ ० ल व र्भ
य न ॥ आय व म्भ नि न मी र्भ स स द म रु व द र्भ ॥ विलि स्य
रु र्भ गुलिका र्भ र्भ स धा न र्भ र्भ ॥ ० वा द र्भ ॥ य वा र्भ स
क र्भ र्भ स व र्भ ग न ॥ गिला की श्री रु र्भ व र्भ ला क वि र्भ र्भ

3497

वनागङ्गायाय ॥ सुदि वक्रा सुदिनियार्थनी ॥ माल्यानि
 कृसेमन्त्रवत्सुखदानिरुर्वीनेदि ॥ स्रष्टामूयु सरुवन लक्ष्मी
 बाधीवसरुना ॥ दृढकवचमज्ञीत्या आरुथसूचजीयजी ॥ न
 वलकृयकृफायि न स्रविशानसिद्धिनि ॥ ॥ ग्राह्या न माया
 निदविशामु न मायु साग ॥ ॥ ॥ निष्ठा नूद कामवदेवा

नैनामकवचस
 वरुयं कृपकीदि
 कृवनि कृष्टा
 ॥ रुगव
 मागङ्गा

ॐ नमो
गङ्गासु
ना॥ कृष्ण
॥ ज्ञानमध्वरम्
ॐ लक्ष्मीकांठी
यातु सामन्ना ना

दावतु। सरकल **५००** लङ्का मुद्रया आग॥ रुसक **५००** ल
ङ्का शानूनी सूचनी यातु च नृना जाधिन च म्य॥ रुसक **५००**
लङ्का गङ्गा (धा) अगम सदावतु। रुसक **५००** लङ्का अगम स
दावतु। सरक **५००** लङ्का यार्दया अगि यून सूचनी। कूना जाधिन
विद्या सर्वार्ग सा सदावतु। क **५००** लङ्का या चार्दया मां यजि नक

तु। रुसक **५००** लङ्का काभाहम दिदि मि नरुतु। रुसक **५००** लङ्का
चाम्पसा यातु सूचनी यना। अगम सा सिमा विद्या चक कामा
सदावतु। सरक **५००** लङ्का नित्या नैमत्य॥ सदावतु। सरक **५००** लङ्का
यातु युनिशां सरक **५००** लङ्का सा यातु मां यून यदवी नदिकन
ययूजिना। क **५००** लङ्का वाचय रुसक **५००** लङ्का न (धा) रुपा सरक

लङ्का जगन्नाथ सुन्दरी सा सदावनु, ॐ ह्रीं यत्रि नासामां
 मेष्टी यत्र सुन्दरी। रुसकलङ्का सकलङ्का सकलङ्का सूर्यीय
 आसुन्दरी मसर्वो जयविजयकुण्ड। सरुकलङ्का सरुकलङ्का स
 रुकलङ्का सायायादुक्का दामादयी श्रीक्रियत्र सुन्दरी। रुसक
 लरुसकङ्का यानाला॥ चतुःकृ यन्मां कंजी आसमीयविजयकुण्ड।

रुसकरुलङ्का निवः सकलङ्का यागु
 नारुगं सरुकरुलङ्का कौंठं सकलङ्का न
 वी साचयागु मां सुन्दरी यना। कप्र ॐ
 यी सकलङ्का दूयी ससाययूका च यागु
 नारु ॐ लङ्का रुके ॐ लङ्का सक ॐ

हृदि ३

२२९ देवी प्रोक्तो जा

लङ्का काधनयूजिनादवी विदिहृमांसदावतु॥ हसकलङ्का
हसक हसकलङ्का हसकल मदाज्ञाने मचायागुमी मदाथातभीय
जा॥ श्रीमासासदभावा नी येजा नाजमिवयिसा॥ ॐ निधिसागिक
यसायजावानी मभारुव॥ मसाल श्रीमदाविद्याभावा जाथात
भीयजा॥ सर्वगमसदायागु श्रीमल्लियूजसूयजी कासासा

ASHA ARCHIVES 3497